ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 53-54

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

स्त्रीवादी लेखिका डॉ. प्रभा खेतान के आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' में आत्मसंघर्ष एवं अधिकार बोध : एक विवेचना

डॉ0 श्रद्धा त्रिपाठी

हिन्दी

Received- 02 .10. 2021, Revised- 06 .10. 2021, Accepted - 10.10.2021 E-mail: vishnucktd@gmail.com

सारांशः ***प्रभा खेतान एक गतिशील व्यक्तित्व की धनी महिला थीं। उनकी आत्मजीवनी 'अन्या से अनन्या' में उनके विद्रोही चरित्र के आत्म संघर्ष की जो झलक मिलती है, वो अनन्य है। उन्होंने कभी यथास्थिति को स्वीकार नहीं किया। एक मारवाड़ी समाज की लड़की का देश–विदेश अकेले यात्रा करना, खुद को स्थापित करने की चाह में निरन्तर संघर्षरत रहना उनके आत्मसंघर्ष का ही साक्ष्य है। उनका विदेश जाकर ब्यूटी थेरॉपी का कोर्स करना तत्पश्चात् ब्यूटी क्लीनिक चलाना, कालांतर में चमड़ें का व्यवसाय और साथ ही साथ उनका लेखन के प्रति प्रतिबद्धता इस बात का प्रमाण है कि वह अपने अधिकारों के प्रति सचेत थीं। व्यावसायिक संस्थाओं एवं समाज सेवा से सम्बद्ध होने के कारण वे 'डायनॉमिक' स्त्री के रूप में प्रतिष्ठित हुईं।***

कुंजीभूत शब्द–आत्मसंघर्ष, अधिकार बोध, गतिशील व्यक्तित्व, आत्मजीवनी, विद्रोही चरित्र, डायनॉमिक।

प्रभा खेतान की मान्यता है कि यह समाज कई–कई मुकामों पर औरत को उसकी पंगुता महसूस करवाता है। अतः जीवन में अपने अधिकार प्राप्ति के लिए स्त्री को स्वयं संघर्ष करना होगा–''औरत के लिए केवल प्यार ही काफी नहीं। व्यक्ति बनने के लिए उसे और भी बहुत कुछ चाहिए। धन, मान, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता सभी कुछ। जीवन शुरू करने के लिए उसे भी पुरुष के बराबर की जमीन चाहिए और इस जमीन को समाज से छीनकर लेना पड़ता है। महज अनुनय–विनय से काम नहीं चलता।'' प्रभा जी जानती थीं कि पितृसत्तात्मक मिथक को तोड़ना आसान नहीं। औरत को वस्तु से व्यक्ति बनने के लिए बहुत संघर्ष करना होगा। समाज द्वारा बनाये हुए मिथक को तोड़ना होगा, अपने अधिकारों के प्रति जागरुक होना होगा। तभी तो वह कहती हैं–''आधुनिक स्त्री की तपस्या, पार्वती की तपस्या से भिन्न है वह प्रार्थना करती है, उस प्रार्थना में वह सब कुछ माँगती है, क्योंकि आज की पार्वती के लिए केवल पति ही काफी नहीं। पुरुष ने शिव के अलावा सत्य और सुन्दर को चाहा तो स्त्री क्यों नहीं अपने जीवन में इसकी माँग करें? स्त्री भी न्याय और औचित्य की माँग करेगी। इस नए सर्जित संसार में प्रगति का प्रशस्त मार्ग, घर की देहरी से निकलकर पृथ्वी के अनन्त छोर तक जाता है। स्त्री को यह समझना होगा।'' वह इस बात को समझ रही थीं। जीवन की छोटी–छोटी घटनाओं से अपना पाठ सीख रही थीं और यह भी समझ रही थी कि केवल पढ़ने से, अध्ययन–चिन्तन और लेखन से स्त्री स्वतंत्र नहीं हो जाती–''सामाजिक पंगुता के विरुद्ध क्रोध और विद्रोह की भावना व्यक्त करने से ही मैं व्यक्ति नहीं हो जाऊँगी। संस्कारों से, परम्परा से मुक्ति की मात्रा बहुत लम्बी है और कठिन।'' दौड़ते रहना ही मानो उनकी जिन्दगी की नियति थी क्योंकि वह जानती थीं कि इस दौड़ भाग में एक दिन वे अपने मुक्ति का रास्ता खोज निकालेंगी। उनके जीवन का गुरुमंत्र था कि–''किसी की परवाह मत करो, बस काम करना है और करती रहो।'' हर रोज, हर पल, उन्होंने अस्तित्व की अग्नि परीक्षा दी। वह यह जान चुकी थीं कि स्त्री–पुरुष अब भी दोस्त नहीं हुए हैं। पुरुष चाहे जितने वायदे करे मगर देर–सबेर पितृव्यवस्था उस पर हावी हो जायेगी और वह स्त्री को व्यवस्था की नजरों से ही तौलेगा। सामाजिक परिवेश की सामूहिक आवाज वहीं की वहीं ठहरी हुई है, जहाँ हजारों साल पहले थी उससे कोई सहायता मिलने की उम्मीद नहीं, वह कहती हैं–''बिना किसी प्रतिशोध के यह लड़ाई मुझे अकेले लड़नी है ताकि मेरे जीवन में रूपान्तरण हो। मुझे अभिव्यक्ति की, विकास की, निर्णय की स्वतंत्रता मिले।''

स्त्री का अस्तित्व पुरुष जाति में है ही नहीं, वह तो हमेशा दोयम दर्जे पर धकेल दी जाती रही है। उसे अपने अधिकारों के लिए अकेले ही संघर्ष की सीढ़ियाँ चढ़नी है। प्रभा अपने विदेश प्रवास के दौरान यह अनुभव करती हैं कि यह समस्या किसी एक जाति या राष्ट्र की नारी की समस्या नहीं, विदेशों में भी औरतों को अपने हक के लिए लड़ना पड़ रहा है। इसी संदर्भ में प्रभा की एक अमेरिकन महिला दोस्त की अभिव्यक्ति द्रष्टव्य है जिसे प्रभा ने अपनी आत्मकथा में उल्लेख किया है–''प्रभा, औरत अभी मनुष्य श्रेणी में नहीं गिनी जाती और तुम अमीर–गरीब का सवाल उठा रही हो? तुम मुझे राष्ट्र का भेद समझा रही हो? माई स्वीट हार्ट, हम सब औरतें अर्ध मानव हैं। पहले व्यक्ति तो बनो।''

पुरुष ने यह व्यवस्था इसलिए बनाई ताकि उसकी सत्ता सलामत रह सके। एक हद तक औरत खुद भी इस व्यवस्था को बनाए रखने में सहभागी रही। हाँ, अभी कुछ वर्षों से औरत ने अपने अधिकारों को पहचाना है मगर जड़ जमाए पुरानी सत्ता तोड़ने में समय तो लग ही जाता है। फिर भी औरत जागृत हुई है। प्रभा ने भी माना है कि–''पुरुष ने अपने स्वार्थ में धर्म, समाज और कानून को बनाया है, औरत ने तो बस अभी–अभी अपने अधिकारों के बारे में बोलना शुरू किया है।'' प्रभा पितृसत्ता के

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-14, No.-IV, Issues-22, YEAR- Oct.-Dec.-2021

इस ओछेपन, दमन, दुराचार को किसी भी कीमत पर स्वीकार नहीं पा रही थीं और उन्होंने लकीर से हटकर व्यवस्था के प्रति विद्रोह किया। कभी उन्हें यह भी लगता था कि उनकी सारी ऊर्जा छोटे–छोटे विद्रोह करने तथा अपने औरतपने को सँभालने में ही खतम हो जाएगी। किसी ने उनसे यह नहीं पूछा कि वो क्या चाहती है? केवल उनसे चाहा गया दूसरों की आशा–प्रत्याशा का दबाव, जो उन्हें तोड़े डाल रहा था। वे समझ रही थीं कि आसपास के व्यक्तियों, सामाजिक और नैतिक दबावों तथा जन्मगत संस्कारों से इतनी जल्दी मुक्त होना सम्भव नहीं। सशक्तिकरण के सारे दावे उनके लिए झूठे पड़ रहे थे। आफिस की मेज पर सर पटकते हुए, खुद को आँसुओं में बहते हुए केवल वे ही देख रही थीं। उन्हें लगता–क्या घर, पति और एक बच्चे के बिना वह अधूरी हैं? या फिर उनके दामन का दाग दूसरों की नजर में उनकी प्रत्येक उपलब्धि को तुच्छ ठहरायेगा। सम्पर्क में आने वाले लोग भी चाहे–अनचाहे उनकी इसी कमी की ओर इशारा करते। उनकी गृहस्थी नहीं थी पर किसी और की गृहस्थी को, उसके सारे बोझ और कर्मकाण्डों को वे कितनी वफादारी से ढो रही थीं और भ्रम पाल रही थीं कि यह गृहस्थी मेरी भी है। उन्होंने पूरी वफादारी से प्यार किया था लेकिन प्यार के मीठेपन के साथ मुँह में बालू के कण भी किरकिराते रहे थे। कभी परिस्थितियों से लड़ पातीं तो कभी उनके सामने घुटने टेकने पड़ते। अपनी तमाम निर्भरता के बावजूद, एक सफल व्यवसायी महिला होते हुए भी डॉ. सराफ से उनके सम्बन्ध के कारण लोगों की ताना–बोली और उपेक्षा से मन की सारी कोमलता झुलस जाती थी। एक तीखी यन्त्रणा झेलने को वे मजबूर थीं।

इस प्रकार प्रभा ने व्यक्तिगत जीवन की तमाम उलझनों और कुंठाओं के बाद भी कभी हार नहीं मानी और एक बेहतर भविष्य का सपना देखना नहीं छोड़ा। उनका मानना था कि व्यक्ति अपने सपनों के सहारे काफी कुछ पा सकता है। वह खुद से कहती है–''प्रभा! यों तिल–तिलकर घुटने के लिए तो तुम पैदा नहीं हुई। यह जिन्दगी हर व्यक्ति को बस एक बार के लिए मिली है उसे भोगना सीखो।'' उन्होंने जीवन जीते हुए यही सीखा भी कि पैसा कमाने से स्त्री निर्णय लेना सीखती है और निर्णय की क्षमता उसके संघर्ष को मजबूर करती है। अब तो वह शहरी मध्यवर्ग से उभरती हुई स्त्री थी जो केवल वोट के अधिकार से ही खुश नहीं थी। उसकी कामना में वैयक्तिक पहचान भी शामिल थी। इसी व्यक्तिगत पहचान के लिए प्रभा आजीवन संघर्षरत् रहीं।

पितृसत्तात्मक व्यवस्था में स्त्री को अपनी पहचान बनाने के लिए कई सारी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है, बहुत सी बाधाओं को पार करना होता है। प्रभा खेतान ने अपनी पहचान के लिए हर चुनौती को स्वीकारा और आगे बढ़ती रहीं। मंजिल को पाने की अपनी एकनिष्ठता के विषय में प्रभा खेतान लिखती हैं–''कैसा पागलपन था, कैसी अंधी जिद, कितनी गहरी आस्था कि गिरती–पड़ती फिर भी मैं अकेली बढ़ती चली जा रही थी अपनी मंजिल की ओर।'' इस प्रकार अपने संघर्षों के द्वारा ही भारत की दस कामयाब महिला के रूप में 'इण्डिया टुडे' में उनकी फोटो छपती है। इतना ही नहीं इन्हें कलकत्ता 'चेम्बर ऑफ कॉमर्स' की प्रथम महिला अध्यक्ष बनने का गौरव प्राप्त हुआ जो अपने आप में बड़ी उपलब्धि है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि प्रभा खेतान का पूरा व्यक्तित्व ही स्त्री के लिए अनुकरणीय है। इस पुरुषवादी समाज में एक स्त्री का उपेक्षा भरे धरातल से संघर्षमय सफर, जो उसे न सिर्फ सफलता की ऊँचाइयों तक ले जाता है, बल्कि इस समाज में पुरुष के बराबर स्थापित करता है। लेखिका ने स्त्री को स्वयं के अधिकारों को पहचानने के लिए कहा है। उनका मानना था कि जब स्त्री को अपने अधिकारों का बोध हो जायेगा, उस दिन वह पुरुष के बराबर धरातल पर खड़ी होगी। स्त्री को सशक्त बनने के लिए पुरुष का विरोध नहीं करना होगा, उसे तो पुरुष के साथ चलकर दोनों को समाज की समान धुरी बनाना है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. प्रभा खेतान, अन्या से अनन्या, पूर्वोक्त, पृष्ठ–257.
2. वही, पृष्ठ–258.
3. वही, पृष्ठ–256.
4. वही, पृष्ठ–256.
5. प्रभा खेतान, अन्या से अनन्या, पूर्वोक्त, पृष्ठ–257.
6. वही, पृष्ठ–104.
7. वही, पृष्ठ–141.
8. प्रभा खेतान, अन्या से अनन्या, पूर्वोक्त, पृष्ठ–159.
9. वही, पृष्ठ–211.

*****